91

रोमी क्रूस पर छह घण्टे

बाइबल पाठ #40

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह (क्रमश:)।
  ज. शुक्रवार: यीशु की मृत्यु का दिन (क्रमश:)।
    9. यीशु की मृत्यु: क्रूसारोहण (क्रमश:)।
      ग. क्रूस पर पहले तीन घण्टे (समाप्त हुए) (मत्ती 27:35, 36, 39-44; मरकुस 15:24, 29-32; लूका 23:34-37, 39-43; यूहन्ना 19:23-27)।
      घ. क्रूस पर अन्तिम तीन घण्टे (मत्ती 27:45-56; मरकुस 15:33-41; लूका 23:44-49; यूहन्ना 19:28-30)।

परिचय

यीशु की मृत्यु पर केन्द्रित दो भागों वाले पाठ का यह दूसरा भाग है। मसीह की शारीरिक पीड़ा को अच्छी तरह समझने के लिए, क्रूसारोहण पर कुछ टिप्पणियां ठीक रहेंगी।

जॉन फ्रैंकलिन कार्टर ने क्रूसारोहण को ''प्राचीन समयों का मृत्यु देने का सबसे क्रूर, सबसे पीड़ादायक, सबसे अपमानित करने वाला और सबसे खतरनाक ढंग'' बताया है।[1] क्रूस पर चढ़ाने का ढंग फारस, मिस्र, बाबुल, फिनीके के लोगों तथा अन्यों द्वारा सदियों तक इस्तेमाल किया जाता रहा है। परन्तु रोमियों ने ''यन्त्रणा तथा मृत्यु दण्ड के रूप में तड़पा-तड़पा कर धीरे-धीरे मृत्यु देने में महारत पा ली थी।''[2]

तड़पा-तड़पा कर मृत्यु देने के इस ढंग की ''खूबी'' यह थी कि क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले व्यक्ति का कोई महत्वपूर्ण अंग क्षतिग्रस्त नहीं होता था। इस कारण व्यक्ति तिल-तिल कर जान दे देता था। क्रूस पर चढ़ाए जाने का दोषी व्यक्ति तीन से चार दिन तक जीवित रह सकता था। कई बार मरने वाले के घावों पर कीड़े और पक्षी हमला कर देते थे। पूरा समय क्रूस पर चढ़ा व्यक्ति पीड़ा से कराहते, ज्वर से तपते और प्यास से तड़पते हुए बिताता और अन्त में एक स्वागती राहत के रूप में उसकी मृत्यु हो जाती थी।

द *जरनल ऑफ़ द अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन* में एक लेख के अनुसार,[3] ''[क्रूस पर चढ़ा व्यक्ति] मृत्यु आने के कई कारण हैं।'' पहली बात, ''जीवित रहने की अवधि कोड़ों की मार पर निर्भर करती प्रतीत होती है।'' फिर क्रूस पर चढ़ाए जाने से ही कलाई में लगी कीलों से नाड़ियों की खराबी ''दोनों भुजाओं में अत्यधिक पीड़ा का तेज़ दर्द

निकलता होगा।'' ऐसा ही ऊपर लगी लकड़ी से पैरों पर कील ठोकने के समय टांगों में होता होगा। इसके अलावा धीरे-धीरे, परन्तु लगातार लहू भी रिसता होगा। ऐसा क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले व्यक्ति को निर्बल करने के उद्देश्य से किया जाता था।

परन्तु, ''क्रूसारोहण का बड़ा [कमज़ोर करने वाला] प्रभाव सामान्य श्वास लेने की प्रक्रिया में बाधा डालना, विशेषकर प्रश्वास था।[4]'' अन्य शब्दों में पीड़ित व्यक्ति के लिए सांस लेना लगभग असम्भव ही होता था। ''[कील ठुके] पांवों[5] को ऊपर उठाने से और कोहनियों तथा कंधों [को खींचने] के लिए पर्याप्त सांस की आवश्यकता होती थी।'' इससे अत्यधिक पीड़ा होती और पट्ठे खिंच जाते थे। ''जिस कारण सांस लेने का हर प्रयास पीड़ा और थकान को और बढ़ा देता था।'' क्रूस पर चढ़ा व्यक्ति ''अन्त में सांस रुकने के कारण''-ऑक्सीजन की कमी से मर जाता था।

रोमी क्रूस पर यीशु के छह घण्टों का विचार करते हुए, उस पीड़ा को ध्यान में रखें, जो वह सह रहा था। इसके अलावा बोलने के लिए सांस लेना आवश्यक है, इसलिए कल्पना करें कि उसके लिए बोलना कितना कठिन होगा।

पहले तीन घण्टे
(मत्ती 27:35, 36, 39-44; मरकुस 15:24, 29-32; लूका 23:34-37, 39-43; यूहन्ना 19:23-27)

क्रूस पर मसीह के छह घण्टे स्वाभाविक ही तीन-तीन घण्टे के दो भागों में बंट जाते हैं: तीन घण्टे प्रकाश के (मरकुस 15:25, 33) और तीन घण्टे अंधकार के (मरकुस 15:33)।[6] पहला भाग लगभग सुबह नौ बजे से दोपहर तक का था।

सिपाहियों ने चिट्ठी डाली

हमारा पिछला अध्ययन यीशु को क्रूस पर कीलों से ठोकने के साथ समाप्त हुआ था। उसकी मृत्यु की रिपोर्ट देने के लिए चार सिपाहियों की ड्यूटी लगी थी (देखें यूहन्ना 19:23)। इस ड्यूटी पर तैनात लोग क्रूस पर मरने वालों के कपड़े उतार लेते थे। सिपाहियों ने यीशु के बाहरी वस्त्रों को चार भागों में बांट लिया, जिसमें किसी को कम मिला और किसी को अधिक (यूहन्ना 19:23क)। बाहरी वस्त्रों में उसका वस्त्र, सिर का कपड़ा, कमरबंद[7] और जूते थे।

परन्तु वे परेशान थे कि उसकी एक चीज़ अर्थात ''कुरते'' का वे क्या करें (यूहन्ना 19:23ख)। यूनानी शब्द का अर्थ ''शरीर को ढकने वाला वस्त्र'' है। सिपाही परेशान थे, क्योंकि यह कुरता ''बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था'' (यूहन्ना 19:23ग)। ऐसे वस्त्र आम तौर पर कपड़े के दो या तीन पीसों को जोड़कर बनाए जाते थे। ''बिन सीअन'' ने इसे और मूल्यवान बना दिया था।[8] इसे चार भागों में फाड़ने से यह किसी काम का नहीं रहना था।

रोमियों ने कहा, ''हम इसे न फाड़ें, परन्तु इस पर चिट्ठी डालें कि यह किसका होगा'' (यूहन्ना 19:24क; देखें मत्ती 27:35; मरकुस 15:24; लूका 23:34)। कपड़े के लिए गुणा

पाकर और चिट्ठी डालकर उन्होंने अनजाने में मसीहा के लिए की गई एक भविष्यवाणी को पूरा कर दिया: ''उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बांट लिए और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली'' (यूहन्ना 19:24ख; देखें भजन संहिता 22:18)।

कपड़े बांटकर, सिपाही नीचे बैठ गए और ''वहां बैठकर उसका पहरा देने लगे'' (मत्ती 27:36)। उन पर यीशु की रक्षा, ''पहरेदारी'' का जिम्मा था (देखें मत्ती 27:54) कि मरने से पहले उसे उसके मित्र क्रूस पर से उतारकर न ले जाएं।[9] क्योंकि आम तौर पर क्रूस पर मृत्यु काफ़ी देर बाद होती थी, इसलिए आशंका थी कि उन्हें काफ़ी देर प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

भीड़ ने अपमान किया

किसी का तमाशा देखना कइयों को बड़ा अच्छा लगता है। लोगों की भीड़ ''खड़े-खड़े देख रही'' थी (लूका 23:35क)। राहगीरों का भी जो पर्व के दिन के लिए नगर में जा रहे थे यहां तांता लगा हुआ था। ''और मार्ग में जाने वाले सिर हिला-हिलाकर[10] और यह कहकर उस की निन्दा करते थे, कि वाह! मन्दिर के ढहाने वाले, और तीन दिन में बनाने वाले![11] क्रूस पर से उतर कर अपने आप को बचा ले'' (मरकुस 15:29, 30)। वे यीशु को चुनौती देते थे, ''यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ'' (मत्ती 27:40ख)।[12]

यहूदी पुरोहित ठट्ठा उड़ाने वालों की अगुआई कर रहे होंगे। ये लोग खुश हो रहे होंगे कि उन्होंने एक परेशान करने वाले अपने विरोधी को सफलतापूर्वक खत्म कर दिया है। ''सरदार'' अर्थात ''प्रधान याजक भी, शास्त्रियों समेत'' (मरकुस 15:31क) उसे ताने मार रहे थे:

> इस ने औरों को बचाया, यदि यह परमेश्वर का मसीह है, और उसका चुना हुआ है, तो अपने आप को बचा ले (लूका 23:35ख)।
>
> उस ने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, यदि वह इस को चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा था, कि ''मैं परमेश्वर का पुत्र हूं'' (मत्ती 27:43)।

उसके सिर के ऊपर लगे चिह्न की ओर इशारा करते हुए वे ठट्ठा करते थे, ''यह तो 'इस्राएल का राजा है' अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें'' (मत्ती 27:42ख)।[13] वे विजयी भाव से घोषणा कर रहे थे, ''इसने औरों को बचाया पर अपने को नहीं बचा सकता'' (मरकुस 15:31ख; मत्ती 27:42क)। एक टीकाकार ने यह अवलोकन किया है: ''अनजाने में [इन अगुओं ने] पवित्र शास्त्र की गम्भीर सच्चाइयां कह डालीं।''[14] उन्होंने वह सच्चाई कही, ''जो उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था: क्योंकि यदि वह दूसरों को बचाना चाहता था तो वह अपने को कैसे बचा *सकता* था?''[15]

सैनिकों ने इस बदलाव का स्वागत किया। वे ''भी पास आकर और सिरका देकर उसका ठट्ठा करके कहते थे, 'यदि तू यहूदियों का राजा है, तो अपने आप को बचा!''' (लूका 23:36, 37)। यहां तक कि यीशु के साथ कष्ट सहने वाले दो डाकू भी उनके साथ मिल गए। आम तौर पर क्रूस पर चढ़ने वालों का अपमान भीड़ के लोग करते थे; परन्तु यहां

आकर्षण का केन्द्र बीच वाला क्रूस था। दोनों अपराधियों ने अपना क्रोध उसी पर उतारा (मत्ती 27:44; मरकुस 15:32ख)।

प्रभु ने प्रार्थना की

यीशु ने शत्रुता के इस सैलाब का कैसे उत्तर दिया? क्या उसने अपने सताने वालों को नष्ट करने के लिए स्वर्गदूतों की बारह पलटनों को नीचे बुलाया (मत्ती 26:53)? नहीं, उसने प्रार्थना की! अपने चेलों को उसने अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करना सिखाया था (मत्ती 5:44)। अब उसने प्रार्थना करके अपनी सिखाई बातों को अपने ऊपर लागू किया, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं?'' (लूका 23:34क)।[16]

एक डाकू ने विनती की

पहले तीन घण्टों के दौरान काफ़ी रोशनी थी: डाकुओं में से एक यह सब देखकर प्रभावित हो गया था। आरम्भ में दोनों अपराधी प्रभु को गालियां दे रहे थे (मत्ती 27:44; मरकुस 15:32); परन्तु जैसे-जैसे समय बीतता गया, उन में से एक मसीह की महिमा और मन की विशालता से पिघल गया।[17] उसने अपने जीवन में क्रूस पर मरने वालों को अपने आस-पास के लोगों को शाप देते देखा होगा, पर अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करते पहली बार देख रहा था।

एक डाकू ने यह कहते हुए गालियां देनी बन्द कर दीं, ''क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आप को और हमें बचा'' (लूका 23:39)! दूसरे ने यीशु का पक्ष लेते हुए कहा: ''क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू भी तो वही दण्ड पा रहा है, और हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं; पर इसने कोई अनुचित काम नहीं किया'' (लूका 23:40, 41)।

उसने प्रभु की ओर मुंह करके कहा, ''हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना'' (लूका 23:42)। उसे यीशु के राज्य का कैसे पता था? क्या उसने मसीह को राज्य की शिक्षा देते सुना था? क्या क्रूस पर रहते समय यीशु के व्यवहार से उसे विश्वास हो गया था कि उसके सिर के ऊपर रखा गया चिह्न सही था? यह हमें नहीं बताया गया। राज्य के बारे में उस डाकू का ज्ञान अवश्य ही सीमित होगा, पर यह अवश्य है कि उसे इस बात की समझ थी कि यीशु यहूदियों का राजा (वह मसीहा, जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे थे) है और इस तथ्य के बावजूद कि वह क्रूस पर मर रहा था, उसने अपना राज्य स्थापित करना था! उस क्षण, इस मरने वाले डाकू ने मसीह के चेलों से भी बड़ा विश्वास दिखाया।[18]

यीशु ''अन्त तक अपने नाम और मिशन के अनुसार'' था, क्योंकि उसने उस पश्चात्तापी डाकू से कहा, ''मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा'' (लूका 23:43)। इस संदर्भ में, ''स्वर्गलोक'' का अर्थ अधोलोक का वह भाग है, जहां धर्मी मृतक न्याय की प्रतीक्षा करते हैं।[19] मसीह ने इस पश्चात्तापी डाकू को क्रूस से बचाने की नहीं, परन्तु पाप के दोष से बचाने की प्रतिज्ञा की। उसने उसे स्वतन्त्रता दी-इस जीवन में नहीं, बल्कि अगले जीवन में।[20]

मित्रों ने शोक किया

क्रूस के निकट कुछ लोग घृणा से नहीं, बल्कि शोक से भरे हुए थे। यीशु के क्रूस के निकट खड़े लोगों में से एक उसकी माता थी (यूहन्ना 19:25ख)। एक पल के लिए मरियम होने की कल्पना करें, जो रोते हुए अपने मर रहे बेटे को देख रही है। शमौन ने उसे चेतावनी दी थी, ''... तेरा प्राण भी तलवार से वार पार छिद जाएगा'' (लूका 2:35क); अब उस क्रूर तलवार ने उसके हृदय को बेध दिया था।

मरियम के साथ और भी स्त्रियां थीं। यूहन्ना ने उन्हें ''उस की माता और उस की माता की बहिन मगदलीनी'' बताया (यूहन्ना 19:25ग)। स्त्रियों की यूहन्ना की सूची की तुलना मत्ती और मरकुस की सूचियों से करने पर (मत्ती 27:56; मरकुस 15:40), पता चलता है कि मरियम (यीशु की माता) की बहन, याकूब और यूहन्ना की माता और जब्दी की पत्नी सलोमी थी।[21] हमने पहले एक कहानी में सलोमी के बारे में पढ़ा था (मत्ती 20:20, 21)।

यूहन्ना की सूची वाली ''क्लोपास की पत्नी मरियम'' सम्भवतया मत्ती और मरकुस की सूचियों वाली ''[छोटे] याकूब और यूसुफ [योसेस] की माता मरियम'' ही थी। मरियम मगदलीनी इन तीनों सूचियों में है। उससे हम अपने पहले अध्ययनों में मिले थे (लूका 8:2, 3), और कहानी में आगे फिर उसका उल्लेख होगा।

यीशु के अन्य ''परिचित'' भी क्रूस के निकट थे (देखें लूका 23:49क; मरकुस 15:41ख)। हो सकता है कि कुछ या सभी प्रेरित कुछ दूरी से खड़े उसे देख रहे हों। कम से कम यूहन्ना प्रेरित तो वहीं था (देखें यूहन्ना 19:26[22])।

यीशु ने प्रबन्ध किया

यद्यपि यीशु असहनीय पीड़ा में था, परन्तु उसे अपनी माता की देखभाल का ध्यान था।[23] उसे निराश देखकर उसका मन अवश्य भर आया होगा। यूहन्ना की ओर देखते हुए, उसने ''पास खड़े देखकर अपनी माता से कहा; हे नारी,[24] देख, यह तेरा पुत्र है। तब उस चेले से कहा, यह तेरी माता है'' (यूहन्ना 19:26, 27क)। इस प्रकार, यीशु ने अपनी माता की देखभाल का प्रबन्ध किया।[25]

''उसी समय से [यूहन्ना] उसे अपने घर ले गया'' (यूहन्ना 19:27ख)। शायद उस पर तरस खाकर, वह उसे तुरन्त गुलगुता से ले गया[26] और पर्व के दौरान जहां भी उसका परिवार रह रहा था, उसे उनके पास ले गया। यदि वह उसे ले गया तो मरियम को अपने पुत्र की पीड़ा से कुछ राहत मिली थी और उत्तेजित भीड़ से उसका बचाव भी हुआ था।

अन्तिम तीन घण्टे
(मत्ती 27:45, 56; मरकुस 15:33-41; लूका 23:44-49; यूहन्ना 19:28-30)

रहस्य

''लगभग दोपहर से'' (लूका 23:44क) जब सूरज सिर पर होता है और धूप बड़ी तेज़ होती है। ''तीसरे पहर तक सारे देश में अन्धियारा छाया रहा और सूर्य का उजियाला जाता रहा'' (लूका 23:44ख, 45क)। क्या यह अंधेरा अचानक छाया था? हम नहीं जानते कि यह घटना केवल यहूदिया में हुई या पूरे पलिश्तीन में या इसके आगे भी। ''सारे देश'' का अर्थ इनमें से कोई भी इलाका हो सकता है। यह सम्भव है कि रोमी इतिहास में इस असाधारण घटना को दर्ज किया गया हो।[27]

इस अंधकार को सूर्यग्रहण कहा गया है, परन्तु फसह के पर्व के दौरान सूर्यग्रहण सम्भव नहीं था। ''[इस पर्व का] मनाया जाना पूर्णिमा वाले दिन होता था (निर्गमन 12:6)''[28] और पूर्णिमा के दौरान सूर्यग्रहण लग ही नहीं सकता।[29] इस घटना की व्याख्या करने के लिए बादल छाये होने की बात भी अपर्याप्त लगती है। यह विश्वास करने के लिए कि अंधेरा अलौकिक घटना थी, कई कारण हैं। (1) लूका ने अंधकार को मन्दिर के परदा गिरने के साथ जोड़ा (लूका 23:44, 45), जो निश्चय ही एक आश्चर्यकर्म था।[30] (2) यह तथ्य कि अंधकार का छंटना यीशु की मृत्यु से संबंधित था, परमेश्वर के हस्तक्षेप का सुझाव देता है।

''तीसरे पहर तक'' (लूका 23:44ख) यानी 3 बजे सायं तक सारे देश में अंधेरा छाया रहा। अंधेरा करने के परमेश्वर के कारणों को हम नहीं बता सकते, पर जॉन कार्टर की टिप्पणियां शायद ठीक निशाने के आस-पास हैं:

> ... कष्ट सह रहे उद्धारकर्त्ता को ठट्ठा उड़ाने और अपने सताने वालों को तथा अपने शोकित मित्रों से छिपाने के लिए अंधकार का परदा उपयुक्त था। वास्तव में मज़ाक करते और ठट्ठा उड़ाते लोग नि:संदेह देश में अंधकार छा जाने पर हट गए होंगे; और यीशु को आराम से कष्ट सहने के लिए छोड़ दिया गया और भी निश्चित बात यह थी कि अंधकार के उन घण्टों के दौरान परमेश्वर ने हम सब की बुराइयां उस पर लाद दी थीं (यशायाह 53:6), जिससे उसने ''हमारे पापों को अपनी देह पर लिए क्रूस पर'' सहा (1 पतरस 2:24), उसे ''हमारे लिए पाप ठहराया'' गया (2 कुरिन्थियों 5:21), परमेश्वर ने उसे ''उसके लहू के कारण एक ... प्रायश्चित ठहराया'' (रोमियों 3:25)। किसी न किसी ढंग से वह ''बाहर अंधकार'' (मत्ती 8:12) के दुखों को सह रहा था ताकि वह उन को जो इसके पीछे चलते हैं ''जीवन की ज्योति'' दे सके (यूहन्ना 8:12)।[31]

अर्थ

अंधकार के घण्टे खत्म होने के निकट, मसीह ने एक के बाद एक चार वचन कहे।

पहला, ''तीसरे पहर के निकट'' उसने ऐसी बात कही, जिससे उसके भयानक कष्ट का पता चलता है: ''एली, एली, लमा शबक्तनी ?'' (मत्ती 27:46ख)। ये इब्रानी और अरामी भाषा के शब्द[32] थे, जिनका अर्थ है ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया ?'' (मत्ती 27:46ख)। इस प्रश्न से इस बात की पुष्टि होती है कि परमेश्वर ने हमारे पापों का दण्ड चुकाने के लिए यीशु को समय के एक काल के लिए छोड़ दिया था।

एक प्रश्न उठता है: ''पर क्या मसीह को अपनी मृत्यु के उद्देश्य की समझ नहीं थी– और, यदि थी, तो उसने परमेश्वर से क्यों पूछा कि 'तू ने मुझे *क्यों* छोड़ दिया है ?' '' इसकी सबसे अच्छी व्याख्या यह है कि यीशु भजन संहिता 22:1 से उद्धृत कर रहा था और उसने भजन लिखने वाले के शब्दों का इस्तेमाल किया था। प्रभु की बात किसी प्रकार के संदेह की घोषणा नहीं थी, बल्कि विश्वास की अभिपुष्टि थी। भजन संहिता से उद्धृत कर उसने दावा किया कि उसकी मृत्यु अभागी त्रासदी नहीं, बल्कि परमेश्वर की योजनाओं तथा उद्देश्यों का पूरा होना था (देखें भजन संहिता 22:6–8, 12–18)।

जब यीशु ने पुकारा, तो कइयों को समझ नहीं आई कि उसने क्या कहा है। उसके शब्द शायद सांस लेने का प्रयास करते हुए टूट रहे थे; शायद बोलते समय उसके विचार कहीं और थे; शायद कुछ लोग (मेरी तरह) बूढ़े थे और उन्हें सुनने में (मेरी तरह) कठिनाई आई होगी। कारण जो भी हो, जब यीशु ने कहा, ''एली'' (''हे मेरे परमेश्वर''), तो कुछ लोगों ने सोचा कि उसने ''एलिय्याह'' कहा है (जिसका अर्थ है ''यहोवा मेरा परमेश्वर [है]'')। उन्होंने निष्कर्ष निकाल लिया कि ''वह तो एलिय्याह को पुकारता है'' (मत्ती 27:47)। शास्त्रियों की शिक्षा थी कि एलिय्याह का आना मसीहा के युग में होगा (मत्ती 17:10)। कइयों ने आकर्षित होकर कहा, ''देखें एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं,'' ''एलिय्याह उसे उतारने के लिए आता है कि नहीं'' (मत्ती 27:49; मरकुस 15:36)।

प्रभु ने उनकी गलती सुधारने का कोई प्रयास नहीं किया, बल्कि ''इस के बाद यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका;[33] इसलिए कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो[34] कहा, मैं प्यासा हूं'' (यूहन्ना 19:28)। एक स्पंज को सिरके से भरे हुए बर्तन में डुबोया गया, उसे एक जूफे पर रखकर,[35] उसके मुंह से लगाया गया (यूहन्ना 19:29; देखें मरकुस 15:36क)। इससे पहले यीशु ने पेय लेने से इनकार कर दिया था; अब उसने इसे ले लिया (मत्ती 27:34; मरकुस 15:23; यूहन्ना 19:30क)। क्योंकि उसका कष्ट लगभग समाप्त होने वाला था, इसके दर्द निवारक गुणों के कारण दवा लेने का कोई कारण नहीं था। शायद, प्यास बढ़ने के कारण वह अपने गले को गीला करना चाहता था, ताकि उसके बाद पुकारने के लिए आवाज़ निकाल सके।

''जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, पूरा हुआ'' (यूहन्ना 19:30क)। उसका कष्ट लगभग समाप्त हो चुका था, पर उसके शब्दों का इससे गहरा अर्थ था। उसने परमेश्वर के उस काम को, जो उसे करने के लिए दिया गया था, *पूरा कर लिया* था (देखें यूहन्ना 17:4[36])। बी. एस. डीन ने लिखा है:

> ''पूरा हुआ''; पूरा हुआ, पृथ्वी पर होने वाला सबसे भला जीवन केवल समाप्त हुआ नहीं; पूरा हुआ, मनुष्य के छुटकारे का काम; पूरा हुआ, सम्पूर्ण हुआ, पुरखाओं और भविष्यवक्ताओं ने पुरानी वाचा के रूपों और प्रतीकों और भविष्यवाणियों का जो अर्थ समझा होगा, उससे कहीं अधिक गहरा अर्थ है।[37]

चार्ल्स स्विन्डॉल ने सुझाव दिया है कि मसीह के शब्द ''विजयी की एक पुकार ... पूरा होने की एक पुकार ... और हां, राहत की एक पुकार'' थे। ''यीशु अब अपने कांटों की जगह मुकुट और अपने नंगेज की जगह वस्त्र, अपने अपमान की जगह महिमा और अपने घावों की जगह आराधना पा सकता था।''[38]

मसीह ने फिर ''बड़े शब्द से पुकार कर[39] कहा; हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं''[40] (लूका 23:46क)। ''और यह कहकर'' (लूका 23:46ख), ''सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए'' (यूहन्ना 19:30ख)। ''पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार ... हमारे पापों के लिए मर'' कर (1 कुरिन्थियों 15:3) प्रभु ने ''प्राण छोड़ दिए'' (लूका 23:46ग; मरकुस 15:37)।

लोगों ने अनुमान लगाए हैं कि यीशु की मृत्यु इतनी जल्दी कैसे हो गई,[41] पर इन आयतों से हमें समझ आ जाती है कि उसने अपने आप को मरने के लिए दिया। मनुष्य उससे उसका प्राण नहीं ले सकते थे; उसने इसे हम सब के लिए स्वयं दिया (यूहन्ना 10:17, 18)।[42]

आश्चर्यकर्म

यीशु की मृत्यु के समय, एक बड़ा भूकम्प आया (देखें मत्ती 27:54) जिसमें ''... धरती डोल गई और चट्टानें तड़क गईं'' (मत्ती 27:51)। भूमि के आह भरने, चट्टानों के तिड़कने से ''कब्रें खुल गईं; और सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें जी उठीं'' (मत्ती 27:52)। पवित्र लोगों का जी उठना स्पष्टतया कई दिन बाद हुआ, क्योंकि मत्ती ने लिखा है, ''*उसके जी उठने के बाद* वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गए और बहुतों को दिखाई दिए'' (मत्ती 27:53)।

धरती के कांपने से नगर के अन्दर, ''मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया'' (मत्ती 27:51क; मरकुस 15:38; लूका 23:45)। इन असाधारण, ध्यान आकर्षित करने वाली बातों से यह घोषित हुआ कि ''पृथ्वी के कांपने'' की घटना हुई है![43]

गुलगुता के लोगों को केवल दो ही आश्चर्यकर्मों अर्थात अंधकार और भूकम्प का पता चला होगा, परन्तु इस तथा क्रूस पर यीशु के व्यवहार से उन पर ज़बर्दस्त प्रभाव पड़ा था। ''जो सूबेदार उसके साम्हने खड़ा था, उसने उसे यूं चिल्लाकर प्राण छोड़ते हुए देखा'' (मरकुस 15:39क)। फिर वह और उसके साथ सिपाही ''भुईंडोल और जो कुछ हुआ था, देखकर अत्यन्त डर गए और कहा, सचमुच 'यह परमेश्वर का पुत्र था' '' (मत्ती 27:54क)। ''सूबेदार ने, जो कुछ हुआ था, देखकर, परमेश्वर की बड़ाई की, और कहा; निश्चय यह मनुष्य धर्मी था'' (लूका 23:47)। फिर, उसने ऐलान किया, ''सचमुच यह मनुष्य,

परमेश्वर का पुत्र था'' (मरकुस 15:39ख), और उसके सिपाहियों ने उसके साथ कहा, ''सचमुच 'यह परमेश्वर का पुत्र था' '' (मत्ती 27:54ख)।[44]

आश्चर्यकर्मों से वहां उपस्थित लोग भी प्रभावित हुए। अंधकार देखकर वे सहम गए होंगे। ''और भीड़ जो यह देखने को इकट्ठी हुई थी, इस घटना को, देखकर छाती पीटती हुई लौट गई'' (लूका 23:48)-जो कि शोक जताने के लिए पूर्व के लोगों का ढंग है (यशायाह 32:12; नहूम 2:7; लूका 18:13)। निश्चय ही, जो कुछ वहां हुआ था, उससे कई सप्ताह बाद दिए जाने वाले पतरस के उपदेश के लिए उनके मनों को तैयार करने के लिए आधार बना था (देखें प्रेरितों 2:14, 23, 36, 37)।

सारांश

यीशु परमेश्वर का पुत्र था; इसलिए हम उसकी मृत्यु को अपनी समझ से बाहर होने की ही उम्मीद करेंगे। हमने परमेश्वर को अपने पुत्र को क्रूस पर मरने के लिए भेजते देखा है! कितना अद्‌भुत है! पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि वह हमारे छुटकारे के लिए मरा (1 कुरिन्थियों 15:3)। आइए इस अद्‌भुत सच्चाई से आनन्दित हों!

टिप्पणियां

[1]जॉन फ्रैंकलिन कार्टर, *ए लेमैन 'स हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1961), 326. [2]विलियम डी. एडवर्ड्स, वैसली जे. गेबल, और फ्लॉयड ई. होस्मर, ''ऑन द फिज़िकल डैथ ऑफ़ जीज़स क्राइस्ट,'' *जरनल ऑफ़ द अमेरिकन मैडिकल एसोसिएशन* (21 मार्च 1986): 1458. [3]वही। 1460-61. [4]''प्रश्वास'' सांस *बाहर* निकालने की प्रक्रिया है। [5]सांस लेने के लिए कील ठुके पांव ऊपर उठाने के लिए शरीर को ऊपर उठाने की आवश्यकता से पता चल जाता है कि क्रूस पर चढ़ा व्यक्ति शीघ्र मृत्यु क्यों चाहता होगा (यूहन्ना 19:31-33)। इस पुस्तक में आगे यूहन्ना 19:31-33 पर नोट्स देखें। [6]हम इन दो भागों के भीतर की घटनाओं के क्रम के बारे में सही-सही नहीं जानते; इस प्रस्तुति में दिया गया क्रम एक सम्भावना है। [7]कमरबंद, जो कि कपड़े या चमड़े की बैल्ट हो सकती है। जहां मैं रहता हूं वहां अधिकतर लोग अधोवस्त्रों को रोकने के लिए ''कमरबन्द'' पहनते हैं, सो मैं ''बैल्ट'' शब्द ही इस्तेमाल करता हूं। [8]इसे आम तौर पर ''एक मूल्यवान वस्तु जो प्रभु के पास थी'' कहा जाता है। शायद यह किसी प्रशंसक का दिया हुआ उपहार था। [9]सिपाहियों ने *दो डाकुओं* के कपड़े भी बांटे होंगे और डाकुओं की भी रखवाली कर रहे होंगे कि उनके मित्र उन्हें क्रूसों से उतारने की कोशिश न करें, परन्तु कहानी में बल यीशु पर दिया गया है। [10]विशेष ढंग से सिर हिलाना उपहास को दर्शाता है (भजन संहिता 22:7; 109:25; यशायाह 37:22; यिर्मयाह 18:16) हर समाज में अपमान करने के लिए संकेत होते हैं।

[11]मन्दिर को फिर से बनाने के बारे में यीशु के पहले शब्दों (यूहन्ना 2:19) का लोगों पर प्रभाव था, परन्तु उसके कथन को तोड़-मरोड़कर पेश किया गया था और उसका अर्थ गलत निकाला गया था। [12]इन लोगों को यह समझ नहीं आई कि यदि यीशु अपने आप को बचा लेता और क्रूस से नीचे उतर आता, तो मनुष्य जाति को उद्धार नहीं दिलाया जा सकता था। वे यह नहीं समझे कि वह क्रूस पर इसलिए रहा, क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र *था,* जिसने अपने पिता की इच्छा के प्रति समर्पण किया था। [13]कुछ ही दिनों में, यीशु ने क्रूस

से उतरने से बड़ा आश्चर्यकर्म करना था–उसने कब्र से बाहर आना था–परन्तु इससे भी इन कठोर मन वाले अगुओं ने विश्वास नहीं लाना था। वे यह नहीं देख पाए कि यीशु का क्रूस से न उतरना अन्त में करोड़ों लोगों के मनों में विश्वास उत्पन्न करने के लिए आवश्यक था (देखें यूहन्ना 12:32)। [14]एच. आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 214. [15]बी. एस. डीन, ''बाइबल इतिहास की एक रूपरेखा,'' पृष्ठ 125. [16]यह क्रूस पर कहे गए यीशु के सात ''वचनों'' में से एक है। यह सम्भवतया घटनाओं की शृंखला में से एक कहा गया। यद्यपि यीशु ने सताने वालों के लिए प्रार्थना की, परन्तु उन्हें क्षमा तब तक नहीं मिली, जब तक उन्होंने अपने पापों से मन फिराकर परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं किया (प्रेरितों 2:22, 23, 36–38)। [17]मत्ती और मरकुस ने संकेत दिया है कि दोनों डाकुओं ने यीशु का अपमान किया जबकि लूका ने कहा है कि उनमें से एक ने यीशु का पक्ष लिया। इन विवरणों को मिलाने का सबसे आसान ढंग यह मान लेना है कि दोनों में से एक डाकू ने पहले तो मसीह का अपमान किया परन्तु बाद में उसने अपना मन बदल लिया। यह सम्भव है कि इस विशेष डाकू द्वारा किए गए आरम्भिक अपमान ऊपरी मन से हों। [18]क्रूस के इस ओर डाकू की कहानी उद्धार पाने की शर्तों के लिए नमूना नहीं है, बल्कि यह इस बात को अवश्य दर्शाता है कि हमें मसीह के लिए कैसे बोलना चाहिए। [19]अधोलोक के इस भाग को लूका 16:22 में ''अब्राहम की गोद'' कहा गया है। हम जानते हैं कि लूका 23 का ''स्वर्गलोक'' अधोलोक का संसार है, क्योंकि पतरस ने कहा है कि यीशु मरने पर अधोलोक में गया था (प्रेरितों 2:31)। हम यह भी जानते हैं कि लूका 23 वाला ''स्वर्गलोक'' स्वर्ग नहीं है, जहां परमेश्वर रहता है। यीशु *उस दिन* स्वर्गलोक में गया था, परन्तु कई दिन बाद, उसने कहा कि अभी वह अपने पिता के पास ऊपर नहीं गया था (यूहन्ना 20:17)। [20]पृथ्वी पर रहते हुए, यीशु को अपनी इच्छा से किसी भी आधार पर क्षमा देने का अधिकार था (देखें मरकुस 2:10)। उसने इस अधिकार का इस्तेमाल कुछ ही बार किया; यह उन में से एक बार था।

[21]इस पुस्तक में आगे ''क्रूस पर स्त्रियां'' लेख पढ़ें। [22]एक बार फिर, मान्यता यह है कि यूहन्ना ने अपने आप को ''वह चेला जिससे [यीशु] प्रेम रखता था'' के रूप में कहा। [23]वह मरियम का सबसे बड़ा बेटा था और उसने अपनी विशेष ज़िम्मेदारी समझी। यह बात कि यीशु ने उसकी देखभाल का प्रबन्ध किया एक और संकेत है कि यूसुफ उससे कुछ समय पहले मर चुका था। [24]जैसा कि पहले कहा गया है, मां को ''हे नारी'' कहना उस समाज में अपमान की बात नहीं माना जाता था। NIV में इसका अनुवाद ''प्रिय स्त्री'' किया गया है। [25]यीशु ने अपने भाइयों पर अपनी माता की देखभाल की ज़िम्मेदारी इसलिए नहीं डाली होगी, क्योंकि इस समय तक वे उसमें विश्वास नहीं लाए थे (यूहन्ना 7:5)। वे क्रूस के पास भी नहीं होंगे। जी उठने *के बाद* वे विश्वासी बने थे (प्रेरितों 1:14)। यदि यूहन्ना एक रिश्तेदार था (इस पुस्तक में आगे ''क्रूस पर स्त्रियां'' नामक लेख देखें) तो इससे यह समझ आ जाएगी कि यीशु ने अपनी माता की देखभाल का जिम्मा उसे क्यों सौंपा। बाइबल से बाहर की परम्परा के अनुसार, मरियम बाद में जीवन भर यूहन्ना के साथ रही। एक और परम्परा के अनुसार, यह प्रबन्ध केवल अस्थाई था और उसने अपने अन्तिम दिन यरूशलेम में ही बिताए। [26]यीशु के अन्तिम सांस लेने के समय क्रूस के पास रुकी स्त्रियों में मरियम का नाम नहीं है (मत्ती 27:56; मरकुस 15:40), जो यह सुझाव देता है कि यूहन्ना उसे वहां से ले गया था। यदि यूहन्ना उसे ले गया था, तो वह स्वयं यीशु की मृत्यु को देखने के लिए समय पर वहां पहुंच गया होगा (देखें यूहन्ना 19:35)। [27]अंधेरे और क्रूस के आस-पास की अन्य अलौकिक घटनाओं पर अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक में आगे ''कलवरी के आश्चर्यकर्म'' देखें। [28]एम. आर. विलसन, ''पासओवर,'' *इन्टरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साक्लोपीडिया,* सामा. संस्क. ज्योफरी डब्ल्यू ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 3:676. निर्गमन 12:6 स्पष्ट रूप से महीने का चौदवां दिन बताता है, जब पूर्णिमा होती है। [29]पूर्णिमा इस बात का संकेत है कि सूरज और चांद पृथ्वी पर विपरीत दिशाओं में होते हैं (और इसलिए चांद सूरज की किरणों को प्रतिबिम्बित करने में चरम पर होता है)। सूर्यग्रहण तभी लगता है जब चांद पृथ्वी और सूर्य के बीच में हो–जो कि चांद और सूरज से विपरीत दिशाओं पर होने से सम्भव नहीं है। [30]इस पुस्तक में आगे ''कलवरी के आश्चर्यकर्म'' प्रवचन देखें।

[31]कार्टर, 329. [32]''एली'' इब्रानी शब्द था, जबकि ''लमा शबक्तनी'' आरामी शब्द। मरकुस के वृत्तांत

में पहले शब्द के लिए ''इलोई'' शब्द इस्तेमाल किया गया है (मरकुस 15:34)। दोनों में थोड़ा सा अन्तर है। [33]प्रभु ने वह विशेष कार्य पूरा कर लिया, जिसके लिए वह पृथ्वी पर आया था: ''हमारे पापों को अपनी देह पर'' क्रूस पर ले जाने के लिए आया था (1 पतरस 2:24)। [34]''पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो'' शब्दों के लिखे जाने का संकेत यह लगता है कि यीशु की बात ''मैं प्यासा हूं'' पुराने नियम के पवित्र शास्त्र का पूरा होना था। यदि ऐसा है, तो यह आयत भजन संहिता 22:15ख या 69:21 की हो सकती है। यह भी सम्भव है कि ''पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो'' का अर्थ क्रूस पर यीशु के सभी अनुभवों को कहा गया होगा। [35]जूफा नीले फूलों वाला एक जंगली पौधा है। इसका तना दो से तीन फुट तक ऊंचा हो सकता है। [36]यूहन्ना 17:4 में यूनानी शब्द का अनुवाद ''पूरा करके'' और यूहन्ना 19:30 में ''पूरा हुआ'' एक ही शब्द से हैं। [37]डीन, 125. यीशु ने पुराने नियम को ''पूरा किया'' (देखें मत्ती 5:17, 18)। एक अर्थ में, उसने उस पूरी की गई वाचा को अपने क्रूस पर कीलों से ठोक दिया (देखें कुलुस्सियों 2:14), और अपनी नई वाचा अर्थात नियम के प्रकाशन के लिए मार्ग तैयार किया (देखें इब्रानियों 9:15-17)। [38]चार्ल्स आर. स्विन्डॉल, *जीज़स, अवर लॉर्ड* (फुलर्टन, कैलिफोर्निया: इनसाइट फ़ॉर लिविंग, 1987), 27. [39]यह बात कि वह अपनी शारीरिक अवस्था में *पुकार* सका, अपने आप में अद्‌भुत है। [40]यीशु ने फिर पुराने नियम की शब्दावली का इस्तेमाल किया होगा (भजन संहिता 31:5)। यदि ऐसा है तो उसने भजन 31 के लिए लिखने वाले से भी चौंकाने वाले ढंग से इसका इस्तेमाल किया।

[41]इस अध्ययन के आरम्भ में यह ज़ोर दिया गया था कि आम तौर पर लोग क्रूस पर कई-कई दिन तक लटके रहते थे। हमारे अगले अध्ययन में उसका उल्लेख किया जाएगा, जो चकित था कि यीशु पहले ही मर चुका था (मरकुस 15:44)। [42]इस और अगले अध्ययन में यीशु की मृत्यु के सम्भावित कारकों की चर्चा की गई है, परन्तु उसका निर्णय मुख्य कारक माना जाना चाहिए। कुछ लोग यह कहते हुए इस विचार को नकार देते हैं कि यह आत्मघात से बहुत मेल खाता प्रतीत होता है। मैं जल्दी से यह कह दूं कि यीशु ने अपने आप को *नहीं* मारा क्योंकि बाइबल स्पष्ट कहती है कि उसे यहूदियों और रोमियों द्वारा ''मारा गया'' था। (प्रेरितों 2:23; 3:15; 5:30; 10:45)। इसके साथ ही उसने अपने शरीर पर कुछ नियन्त्रण बनाए रखा। मेरे भाई कोय ने ध्यान दिलाया है कि *आत्महत्या* व *बलिदान* से मृत्यु में अन्तर है। बलिदान से हुई मृत्यु के विषय में लिखते हुए उसने एक सिपाही का उदाहरण दिया है, जो अपने साथी सिपाहियों को बचाने के लिए बम के ऊपर लपक पड़ता है (पर्सनल कॉरसपोंडेंस, 3 अप्रैल 2002)। [43]इन आश्चर्यकर्मों के सांकेतिक महत्व के लिए इस पुस्तक में आगे ''कलवरी के आश्चर्यकर्म'' देखें। [44]सिपाहियों के कहने का मतलब था कि ''*सचमुच* यह *परमेश्वर का* पुत्र था!''